प्रश्न २७—हर्ष की गणना महान सम्राटों में क्यों की जाती है ? उसके शासन काल का इतिहास जानने के लिए जो साधन हैं, उनका उल्लेख करते हुए उसकी सफलताओं और विफलताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

हर्ष शासक और विजेता के रूप में महान था किन्तु शान्ति के निर्माता के रूप में महत्तर'—सिद्ध कीजिए।

अथवा

'हर्ष की विजयों का वर्णन करते हुए उसकी शासन-प्रणाली का उल्लेख कीजिए। (१९५९, १९६१, १९६३, १९६६)

हर्ष की गणना प्राचीन भारत के महान शासकों में की जाती है। इतिहास में उसे इतनी प्रसिद्धि प्राप्त हुई कि उसने अपने बाद के महान शासकों के यश को बहुत कुछ कम कर दिया। इतिहासकार स्मिथ ने लिखा है कि हर्ष के बाद सम्पूर्ण हिन्दू भारत में हर्ष के समान कोई साम्राज्य निर्माता नहीं हुआ। यह कथन ऐतिहासिक साक्ष्य पर आधारित नहीं है, फिर भी हर्ष के व्यक्तित्व में जिन विविध गुणों का समन्वय था उसके कारण वह वास्तव में अमर हो गया है। हर्ष का सबसे बड़ा सौभाग्य यह है कि उसे बाणभट्ट जैसा महान् जीवनी लेखक और ह्वेनसाँग जैसा गुणग्राही चीनी यात्री मिल गया जिन्होंने उसके कार्यों और गुणों के सम्बन्ध में प्रचुर परिमाण में लिखा है।

जानकारी के साधन

इतिहासकार स्मिथ ने लिखा है कि "सातवीं शताब्दी का इतिहास जानने के लिये प्रचुर सामग्री विद्यमान है। छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध का इतिहास जानने के लिए सामग्री के अभाव की कठिनाई का अनुभव सातवीं शताब्दी की कहानी कहते समय नहीं होता।"

विभिन्न साधनों द्वारा हर्षवर्धन के समय के इतिहास का ज्ञान प्राप्त होता है। ये प्रमुख साधन हैं —

(१) पुरातत्व सम्बन्धी साधन

पुरातत्व सम्बन्धी साधनों के अन्तर्गत (क) ताम्रपत्र और (ख) अभिलेखों की गणना की जाती है। ताम्रपत्र केवल दो प्राप्त हुये हैं। एक ताम्रपत्र वंशखेरा और दूसरा मधुवन के ताम्रपत्रों के नाम से प्रसिद्ध है। इनसे हर्षवर्धन के वंश का परिचय ज्ञात होता है। सोनपत्त में एक ताँबे की मुहर प्राप्त हुई है, इससे भी हर्षवर्धन के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। पुलिकेशन द्वितीय का ऐहोल लेख भी हर्ष का इतिहास जानने में सहायक है।

(२) साहित्यिक साक्ष्य

साहित्यिक साक्ष्य के अन्तर्गत निम्नलिखित ग्रन्थ आते हैं—(क) हर्ष द्वारा लिखित ग्रंथ (ख) बाण का हर्ष चरित्र (ग) ह्वेनसाँग का विवरण और (घ) ह्वेनसांग की जीवनी।

(क) हर्ष द्वारा लिखित ग्रंथ

हर्ष स्वयं एक साहित्यकार था। उसकी गणना उच्चकोटि के कवियों और नाटककारों में की जाती है। हर्ष के 'नागानन्द', 'प्रियदर्शिका' तथा 'रत्नावली'

प्रसिद्ध नाटक हैं। इनके द्वारा हर्ष-काल के धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन पर काफी प्रकाश पड़ता है।

(ख) वाण का हर्ष चरित्

वाण भट्ट के हर्ष चरित् नामक ग्रंथ से भी हर्ष कालीन इतिहास का पर्याप्त ज्ञान होता है। इस ग्रन्थ का बहुत अधिक महत्व है क्योंकि उसमें वाणभट्ट ने अपनी आँखों देखा वर्णन किया है। इस ग्रंथ में अतिशयोक्ति बहुत है, अतएव इतिहासकारों को इसका प्रयोग सावधानी से करना चाहिये। यह एक काव्य ग्रंथ है फिर भी हर्ष कालीन धार्मिक एवं सामाजिक व्यवस्था पर इससे विशेष प्रकाश पड़ता है।

(ग) ह्वेनसाँग का विवरण

ह्वेनसाँग अपने पर्यटन काल में पर्याप्त समय तक भारत में रहा। उसके विवरण से भी हर्ष के समय की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक व्यवस्था का विशेष ज्ञान प्राप्त होता है।

(घ) ह्वेनसाँग की जीवनी

ह्वेनसाँग की मृत्यु पर उसके मित्र हुई-ली ने उसकी जीवनी लिखी। इससे भी हर्ष का इतिहास जानने में काफी सहायता प्राप्त होती है।

हर्ष की प्रारम्भिक कठिनाइयाँ

हर्षवर्धन थानेश्वर के राजा प्रभाकर वर्धन का पुत्र था। वह ६०६ ई० में पैतृक राज्य का स्वामी बना। उस समय थानेश्वर का राज्य घोर संकट में था। मालवा के राजा देवगुप्त व गौड के शासक शशांक ने गठबन्धन करके कन्नौज राज्य पर आक्रमण कर दिया था। कन्नौज का राजा ग्रहवर्मा हर्ष का बहनोई था। उन्होंने ग्रहवर्मा की हत्या कर दी और उसकी पत्नी राज्यश्री जो हर्ष की बहन थी, को जेलखाने में डाल दिया था। दुष्टों का दमन करने के लिए हर्ष का बड़ा भाई राज्यवर्धन एक बड़ी सेना लेकर कन्नौज की ओर चल दिया। परन्तु दुष्टों ने छल-कपट से उसे भी मार डाला। इस प्रकार थानेश्वर व कन्नौज के दोनों राज्यों को संभालने का उत्तरदायित्व हर्ष पर आ पड़ा। उस समय हर्ष की आयु केवल १६ वर्ष की थी। यद्यपि उसका हृदय प्रिय-जनों की मृत्यु से विक्षुब्ध था, परन्तु उसने कर्त्तव्य से मुख नहीं मोड़ा। वह थानेश्वर का राजा बना और उसने दुष्टों का विनाश करने की प्रतिज्ञा की।

वाणभट्ट लिखता है कि गद्दी पर बैठते ही हर्ष हत्यारों को दण्ड देने, कन्नौज को शत्रुओं से मुक्त करने एवं राज्यश्री को खोजने के लिये एक विशाल सेना लेकर निकल पड़ा। मार्ग में उसे कामरूप का राजा भास्करवर्मन का दूत मिला जो मित्रता का संदेश लेकर आया था। हर्ष ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और उसे अपना मित्र बना लिया। फिर उसने राज्यश्री की खोज की जो विन्ध्य के जंगलों में मिली। इसी बीच हर्ष के सेनापति ने देवगुप्त को युद्ध में पराजित किया और उसकी हत्या कर दी। अपनी स्थिति कमजोर देखकर शशांक भी कन्नौज छोड़कर भाग गया।

कन्नौज का राज्य इस समय अस्त-व्यस्त था। ग्रहवर्मा का कोई उत्तराधिकारी न था और राज्यश्री शासन का कार्य संभालने के लिए तैयार न थी। फलतः